International Journal of Humanities and Social Science Research
ISSN: 2455-2070; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 15-07-2020; Accepted: 30-07-2020; Published: 16-08-2020
www.socialsciencejournal.in
Volume 6; Issue 4; 2020; Page No. 147-149

सरदार बल्लभभाई पटेल का व्यक्तित्व, कृतित्व व एक भारत श्रेष्ठ भारत

अयोध्या प्रसाद सिंह

एसोसिएट प्रोफ़ेसर व विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग, एस० एम० (पी०जी०) कॉलेज चन्दौसी जिला सम्भल, उत्तर प्रदेश, भारत

प्रस्तावना

मात्र वाह्य आकृति से किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व का सही तथा पूर्ण आंकलन नहीं हो सकता | सही आंकलन हेतु आन्तरिक गुणों की समुचित जानकारी आवश्यक है | पटेल का खुरदुरा, बेमुलायम और करीब-करीब खूंखार वाह्य आवरण भयप्रद था जिससे प्रतीत होता था कि मानों वे बिल्कुल ह्दयहीन थे और मानवीय भावनाओं से उनका कोई संबंध न था | स्वभाव से कठोर, निर्मम तथा दृढ़ निश्चयी थे | वे मितभाषी थे | उनके शब्द प्रायः तीक्ष्ण व काट करने वाले होते थे | "व्यक्तित्व के इसी पक्ष के कारण यश और प्रसिद्धि के चर्मोत्कर्ष को छूने पर भी वे लोकप्रियता के उस चरम बिन्दु पर नहीं पहुंच सके, जहाँ नेहरू जी पहुंचे |"1 परन्तु इस कठोर व्यक्तित्व के पीछे एक कोमल ह्दय छिपा था जिसका ज्ञान कम लोगों को था | पुरुषोत्तमदास टंडन के अनुसार :"जो उनको जानते थे वे बतलाते हैं कि वह बहुत ही दयावान मनुष्य थे और मौका पड़ने पर बहुत कोमल प्रदर्शित करते थे | उनसे बढ़कर अधिक मित्र-परायण और भरोसा करने वाला साथी पाना मुश्किल था |"2

यदि हम सरदार पटेल के जीवन का भली-भांति अध्ययन करें तो प्रतीत होगा कि उनका व्यक्तित्व बहुमुखी था | सरदार पटेल एक स्वनिर्मित व्यक्ति थे| वे कठोर उद्देश्य परायणता तथा दृढ़ संकल्प के प्रतीक थे | उनमें एक कृषक की जन्मजात सहनशक्ति, परिश्रमशीलता, सच्चाई और स्वाभिमान के सभी गुण विद्यमान थे |

सरदार स्वयं स्पष्टवादी थे तथा दूसरों से भी स्पष्ट व्यवहार चाहते थे| उनका जीवन प्रारंभ से अंत तक एक खुली पुस्तक के समान था | वे उस

1 व्यक्ति से घृणा करते थे जो शंका की परिधि में हो | सरदार पटेल एक दूरदर्शी व्यक्ति थे तथा आशा उनकी संगिनी रही | उनके जीवन के असंख्य उदाहरण उनकी दूरदर्शिता का सजीव चित्रण प्रस्तुत करते हैं | कश्मीर में पाकिस्तान के आक्रमण से लॉर्ड माउंटबैटन चिन्तित थे और नेहरु निराश, परंतु सरदार पटेल ने आशा-भरे शब्दों में कहा था, कश्मीर बचकर रहेगा | साथ ही साथ वे कश्मीर के प्रश्न को संयुक्त राष्ट्र संघ में ले जाने के विरुद्ध थे | यदि कश्मीर का विवाद पटेल से अलग न किया जाता तो आज तक यह एक हड्डी की भांति गले में अटका न रहता |3

सरदार पटेल एक सत्य-प्रिय व ईमानदार व्यक्ति थे | उनकी राजनीति नैतिक स्तर पर आधारित थी | उनकी नैतिकता का सबसे बड़ा प्रमाण नेहरू के संबंध में गांधीजी को दिया गया वह वचन था जिसके आधार पर उन्होंने नेहरू जी को जीवन-भर अपना नेता स्वीकार किया |

विरोधी के ह्दय को जीतना सरदार की एक विशिष्ट कला थी | वे अपना पक्ष ऊपर रखते हुए अपने शत्रु से भी काम ले लेते थे | भारतीय स्वतंत्रता के साथ देशी राजाओं को दोनों उपनिवेशों (भारत व पाकिस्तान) से अलग रहने की छूट से अनेक देशी राजा पटेल के शत्रु बन गए परंतु सरदार पटेल ने उनके दिलों को जीतकर देशी राजाओं को भारतीय संघ में सम्मिलित करके इतिहास में एक अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत किया | सरदार की मृत्यु पर अनेक राजा यह कहकर रोये कि उनका मित्र व रक्षक चला गया |4

सरदार पटेल स्वतंत्र प्रकृति के व्यक्ति थे | उन्होंने कभी बुलबुले उत्पन्न नहीं किए | सदैव स्वतंत्र सदस्यता, चिंतनशील कार्य पद्धति पर चले | यद्यपि उन्हें गांधीजी का अंधभक्त कहा जाता है परंतु अनेक अवसरों पर उन्होंने गांधी जी से असहमति व्यक्त की | उदाहरणार्थ, गुजरात विद्यापीठ का पुस्तकालय जो कि गांधीजी ने स्वर्गीय काका कालेलकर की सलाह से अहमदाबाद म्युनिसिपैलिटी को एकपक्षीय निर्णय दे दी थी, सरदार पटेल की दृढ़ता व स्पष्टता के कारण उसको वापस लेना पड़ा | सरदार का दृष्टिकोण व्यवहारिक था | उन्होंने कभी जनता की भावनाओं से खेलने का प्रयास नहीं किया | गांधी जी के सामान न तो वह एक सन्त थे और न ही जवाहरलाल के समान आदर्शवादी थे, वे कभी भावनाओं या कल्पनाओं की उड़ान में नहीं उड़े | गांधी

2 जी के सिद्धान्त तथा व्यवहार में अहिंसावादी थे, परंतु सरदार उस सीमा तक अहिंसा में विश्वास करते थे जब तक व्यवहारिक है | वे उस सीमा तक अंतर्राष्ट्रीयवादी थे, जहाँ तक देश का हित सर्वोच्च रहे |

सरदार का व्यक्तित्व प्रेरणादायक था | वह किसी भी विचार को तत्काल समझ लेते, उस पर तत्काल विचार करते तथा तत्काल कार्यवाही करते थे | उनका विश्वास था कि मित्रों तथा साथी कार्यकर्ताओं के एक नेता के प्रति भक्ति में परस्पर बंधकर सामूहिक रुप से कार्य करके ही किसी कार्य को संपन्न किया जा सकता है | वे सदा ही चुस्त रहते और सूचनाओं को ग्रहण कर उनको अपने मन में उसी प्रकार संजोकर रखते थे, जिस प्रकार शहद के छत्ते के किसी विशेष क्षेत्र में शहद जमा रहता है और उसे तब तक जमा रखते थे कि उस मामले के पक जाने पर उसका उपयोग करने की आवश्यकता न पड़ती |5

सरदार पूर्ण रूप से आस्तिक थे | ईश्वर में उनकी पूर्ण आस्था थी | प्रायः वे कहा करते थे कि ईश्वर नियम अपरिवर्तनीय है | मृत्यु के संबंध में उनका विश्वास था कि “ मृत्यु निश्चित है पुण्यात्मा मनुष्य कभी नहीं मरता | राम और कृष्ण के नाम उनके कृत्यों से ही अभी तक अमर है मौत तो जन्म से साथ है और मरने के बाद दुख भी क्या होगा ? इसलिए मौत का भय तो छोड़ ही दीजिए | हिम्मत होगी तो भगवान भी मदद करेगा | ”6

प्रायः यह कहा जाता है कि सरदार अपने व्यक्तिगत जीवन में बहुत ही नीरस व्यक्तित्व के थे | यह आरोप पूर्णत: सत्य नहीं हैं | सरदार अपने हँसोड़ स्वभाव, बेलगाम, हाजिरजवाबी और अपने प्रतिद्वंदी को जीतने की क्षमता के लिए प्रसिद्ध थे |

अशोक मेहता ने सरदार को एक "इस्पात का व्यक्ति" बताया, जिनमें "चट्टान की तरह आत्मविश्वास था |" वे जरा भी जल्दबाज नहीं थे | उनमें संयम था, वे रुकना जानते थे और रुककर, समय और साधनों की प्रतीक्षा

कर एक बार जब कदम आगे बढ़ा देते, तो बढ़े हुए कदमों को पीछे मोड़ना तो दूर रहा, उसे रोकना नहीं जानते थे | अपने उद्देश्य मार्ग के अवरोधों को हटाने में वे एक ऐसे अभिजात आक्रमणकारी थे जिसके हृदय में लेशमात्र भी दयाभाव नहीं रहता |7

3 सरदार पटेल की 74वीं वर्षगांठ पर अपने लेख में पट्टाभि सीतारमैया ने उनके व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए लिखा है :

"सरदार में, मौलाना आजाद का-सा पाण्डित्य नहीं है, लेकिन उनमें सामान्य विवेक कहीं अधिक है | जवाहरलाल की तरह उन्होंने अधिक यात्रा नहीं की, लेकिन उनमें विचारशक्ति इतनी अधिक है कि जो उन्हें अपने आप से दूर क्षेत्र में ले जाती है | उनमे सुभाष बाबू के असाधारण कार्यों का कुछ भी उत्साह नहीं है लेकिन वे मोर्चे की अपनी योजना बनाते हैं और बेरहमी से उस पर अमल करते हैं | वे बहुत थोड़ा लिखते हैं, लेकिन जब वह शुरू करते हैं तो वे सुगम कलम काम में लाते हैं और उस शैली पर पूर्ण अधिकार रखते हैं जो नितान्त मंजी और स्पष्ट है | वह बहुत चमत्कृत भाषण देना नहीं जानते, लेकिन वे अपने भाषणों में अपना हृदय उड़ेलकर रख देते हैं, जिसे वे अपनी प्रतिभा, चमकीले मजाक के द्वारा ; कथा और चुटकुलों के द्वारा ; कहानी और दृष्टांत से मनोहर बना देते हैं | उनके वाक्य छोटे, तीव्र और सुडौल होते हैं | स्वराज्य स्थापित होने पर बहुत सालों तक वह गांधीजी के सबसे अधिक विश्वस्थ प्रचारक, एक दृण इच्छा और निश्चित कार्यशील व्यक्ति के रूप में याद किया जाएंगे, साथ ही जनता उन्हें विश्वास, आशा और परोपकार- इन तीन गुणों से पूर्ण देश और मानवता का सेवक समझेगी- जो तीन विशेषताएं ईसा ने अपने शिष्यों को सिखलाई थीं |"8

भारत की परम्परा में गुरु के प्रति शिष्य का सम्मान, गुरु के प्रति श्रद्धा और गुरु के पदचिन्हों का अनुसरण, जिस ढंग से किया जाना चाहिए, वल्लभभाई ने वही किया | यह गांधीजी के प्रति श्रद्धा और सम्मान का ही अद्वितीय और त्याग से भरपूर उदाहरण था कि वल्लभभाई ने 1929, 1936, 1937, और 1946 में चार बार भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की अध्यक्षता को उनकी इच्छा को शिरोधार्य करते हुए छोड़ दिया | ये चारों अवसर भारत के समकालीन इतिहास और राजनीति में अपने-अपने कारणों से महत्वपूर्ण थे |

पटेल की अपनी व्यक्तिगत पहचान थी, अपने विचार थे, उन्हें चिंतन का आधार गुरु से मिला, अपने गुरु के संदेश को व्यावहारिकता उन्होंने दी, लेकिन उनकी अपनी पहचान थी | वल्लभभाई को चिंतन का आधार निश्चित रूप से महात्मा गांधी से मिला, गांधीवाद के प्रचार-प्रसार का बीड़ा उन्होंने

4 उठाया, लेकिन उनकी अपनी अति उत्तम पहचान थी, न केवल राजनीतिक या सामाजिक क्षेत्र में ही, अपितु कई अन्य क्षेत्रों सहित आर्थिक क्षेत्र में भी, अपने स्वयं के कार्यों व विचारों के आधार पर वर्ष 1937 में गठित 'हिंदुस्तान मजदूर सेवक संघ और राष्ट्रीय मजदूर कांग्रेस की स्थापना में वल्लभभाई का प्रमुख व निर्णायक योगदान रहा है | वे ही संगठन को संरचना हेतु बनी समिति के प्रथम अध्यक्ष थे |9

यही नहीं, सरदार वल्लभभाई पटेल 'गांधी सेवा संघ' 'श्रमिक समिति' जैसे संगठनों की स्थापना में अग्रणीय रहे थे, डाक तार कर्मचारी यूनियन अगुवा रहे थे और श्रमिकों की समस्याओं पर, विशेष रूप से उनके आर्थिक पक्ष पर उन्होंने समय-समय पर अपने विचार व्यक्त किए, विचारों के अनुरूप तथा अवसरानुसार कार्य किये | वे केवल किसान नेता ही न थे | अपितु श्रमिकों की समस्याओं से भली-भांति परिचित भी थे |10

यह इतिहास की एक बहुत बड़ी सत्यता है कि सरदार वल्लभभाई का व्यक्तित्व जीवन उपरोक्त चारों विशेषताओं क्रमशः समान स्तर की स्थापना, पूंजी और श्रम के मध्य संघर्ष की समाप्ति, आवश्यकता से अधिक न लेना तथा अर्थशास्त्र और आचारशास्त्र में अभेद के साथ ही ट्रस्टीशिप के गांधी जी के सिद्धान्त को ग्रहणकर्ता श्रेष्ठतम उदाहरण है | लेकिन, जैसा कि मैंने पहले ही उल्लेख किया है कि एक उत्तरदायी और व्यावहारिक व्यक्ति के रूप में साथ ही देशकाल की परिस्तिथियों में माँग के अनुसार, सिद्धान्ततया गाँधीवादी आदर्शों अथवा दूसरे शब्दों में अहिंसक गाँधीवादी अर्थव्यवस्था को नकारते हुए वल्लभभाई सार्वजानिक वास्तविकता से भी मुँह नहीं मोड़ते इसी सन्दर्भ में जो बात सर्वप्रथम हमारे समक्ष आती है वह यह कि भारत के सात लाख से भी अधिक ग्रामों में बसने वाले करोड़ो किसान व उनके सहयोगी, जिनके जीवन का आधार कृषि है और जो भारत की अर्थव्यवस्था का भी मुख्य स्रोत है की महत्ता स्वीकार करते हुए भी वल्लभभाई देश को औद्योगिक रूप से सम्पन्न और सुदृढ़ देखना चाहते थे |11

भारत के मा० प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने राष्ट्रीय एकता के सूत्रधार सरदार वल्लभभाई पटेल के जन्म दिवस पर 31 अक्टूबर, 2015 में एक भारत

5 श्रेष्ठ भारत नामक एक नई योजना के बारे में बात की है | यह भारत सरकार द्वारा पूरे देश में एकता और अखण्डता को मजबूत बनाने का एक प्रयास है |12

प्रधानमंत्री ने घोषणा की है कि भारत सरकार देश के विभिन्न हिस्सों के बीच सांस्कृतिक सम्बन्धों को बढ़ावा देने के लिए एक नई पहल की शुरुआत की है | भारत के संपूर्ण राज्य के लोगों को बातचीत के माध्यम से आपस से जोड़ने का एक अनूठा मार्ग साबित होगा | हमारे देश में सत्रह सौ से ज्यादे बोलियां हैं| सबसे ज्यादे माध्यम है संगीत, वाद्य तथा अलग-अलग भाषाओं की अनूठी झलक दिखाई देती है | वस्तुतः आज आवश्यकता इस बात की है कि हम अन्य विकसित देशों की तरह भारत को भी भाषायी एकता की मणिमाला में सुसज्जित करने का प्रयास करें | देश को जितना गर्व अपने भाषा पर है उतना ही गर्व संस्कृति पर है |

तमिलनाडु के बारे में कहा जाता है कि यह एक समृद्ध राज्य है | तमिल सभ्यता विश्व की पुरातन सभ्यताओं में से एक है | तमिल यहां की अधिकारिक भाषा है और हाल में ही इसे जनकभाषा का दर्जा मिला है | तमिल भाषा का इतिहास काफी प्राचीन है, जिसका परिवर्तित रूप आज सामान्य बोलचाल में प्रयुक्त होता है | तमिलनाडु की सांस्कृतिक विशेषता तंजावुर के भित्तिचित्र, भरतनाट्यम, मन्दिर-निर्माण तथा अन्य स्थापत्य कलाएं हैं | भारत की विविधता में ही हमारी ताकत है | मोदी जी ने अपने व्याख्यान में कहा कि भारत के अन्य राज्यों के छात्र तमिलनाडु जाएं तो उससे उनको सिख मिलेगी | एक राज्य को दूसरे राज्य की संस्कृति सबको जाननी चाहिए | इससे हमारी संस्कृति एवं वेशभूषा को बढ़ावा मिलेगा | अलग-अलग भाषाओं को बोलने एकता को बढ़ाने में बल मिलेगा |

भारत विश्व की सबसे पुरानी सभ्यताओं में से एक है, जिसमें बहुरंगी विविधता और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत है | इसके साथ ही साथ यह अपने-आप को बदलते समय के साथ उसी सांचे में ढालने का प्रयास भी किया है | स्वतंत्रता के बाद भारत ने बहु आयामी सामाजिक एवं आर्थिक रूप से दिन-प्रतिदिन विकास किया है | भारत कृषि प्रधान देश है | अब विश्व के सबसे औद्योगिक देशों की श्रेणी में भी इसकी गिनती की जाती है |भारत विश्व का सातवां देश होने के नाते शेष एशिया से अलग दिखता है, जिसकी विशेषता

6 पर्वत एवं समुद्र ने तय की है और ये इसे विशेष भौगोलिक पहचान देते हैं

| उत्तर मे विशाल पर्वत श्रंखला हिमालय से घिरा हुआ यह कर्क रेखा से आगे संकरा होता जाता है | पूरब में बंगाल की खाड़ी, पश्चिम में अरब सागर तथा दक्षिण में हिन्द महासागर इसकी सीमा निर्धारित करते हैं |

भारत अनेकता में एकता का एक महान प्रदर्शन है जहाँ भिन्न-भिन्न धर्मों तथा संस्कृतियों के लोग एकता के साथ रहते हैं | यह लोगों को नैतिक एवं सहिष्णु बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है | विविधता में एकता के बिना, मानवता जल्द ही अपना प्रलयकाल देख लेगी |

अतः हमेशा मतभेदों को स्वीकार करने और एक-दूसरे के साथ शान्ति बनाने की कोशिश की जानी चाहिए |

सन्दर्भ सूची

1. सेठ गोविन्द दास : सरदार वल्लभभाई पटेल, पृ० 95
2. एस० के० पाटिल: 'महान निर्णयात्मक व्यक्ति', पटेल अभिनन्दन-ग्रन्थ, पृ० 46
3. डॉ एन० सी० मेहरोत्रा एवं: सरदार वल्लभभाई पटेल,
4. डॉ रंजना कपूर: व्यक्ति एवं विचार, आत्मा एण्ड सन्स दिल्ली, पृ० 21
   4- वही, पृ० 211-212
5. वही, पृ० 212
6. वही, पृ० 212
7. अशोक मेहता : 'सरदार पटेल - एक शब्दचित्र', पटेल अभिनन्दन-ग्रन्थ, पृ० 49
8. पट्टाभि सीता रमैया : 'सचमुच एक सरदार', पटेल-अभिनन्दन-ग्रन्थ, पृ० 11
9. डॉ रवीन्द्र कुमार: सरदार पटेल, व्यक्तित्व के अनछुए पहलू, डायनेमिक पब्लिक लि०मेरठ, पृ० 41
10. वही, पृ० 42
11. वही, पृ० 44
12. नरेन्द्र भाई मोदी: प्रधानमंत्री, भारत सरकार का एक वक्तव्य